Dr. Dinesh Prasad Kamal
Professor,
Ancient Indian History and Archaeology
Patna University
Mob:9431047888

Email: dineshkamal78@gmail.com

Teaching

- भारतीय संस्कृति में शिक्षा के उल्लेख एवं आदर्श की विवेचना करती है।
- प्राचीन भारत में शिक्षा का विशेष महत्व रहा है।
- धर्म सभ्य समाज शिक्षा पर बल देता है, जिससे मनुष्य की अज्ञानता दूर होती है।
- मनुष्य की अज्ञानता दूर होती है, और व्यक्तित्व का विकास होता है।
- ज्ञान को मनुष्य तीसरी आँख कहा जाता है।
- अगर कोई व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को कहा है तो केवल इसलिए कि उसका मस्तिष्क और बुद्धि शिक्षा विहीन हो गई है।
- वैसरी शिक्षा के बिना हम मनुष्य को समान है।
- प्रकृति कुशिक्ष
- मनुष्य की ~~शारिरिक~~ ~~शारिरिक~~ शारीरिक, मानसिक बौद्धिक एवं आध्यात्मिक क्षमताओं का विकास होता है।

I. प्राचीन भारत में शिक्षा का उल्लेख मनुष्य की
- उन्नति, अथवा विकास

जैसे- आध्यात्मिक शक्तियों को जागरित करना,
- व्यक्तित्व का उत्थान करना,
- सामाजिक, कर्तव्यों को ~~जागृति~~ कर उत्थान

II. प्राचीन ~~काल~~ भारतीय शिक्षा पद्धति ~~में~~ वर्तमान अध्यापन में, पुरोहित - शिक्षक - पुरोहित और ब्राह्मण हुआ करते।
- विद्या अर्जन के पहले, विभिन्न विधियों का पालन

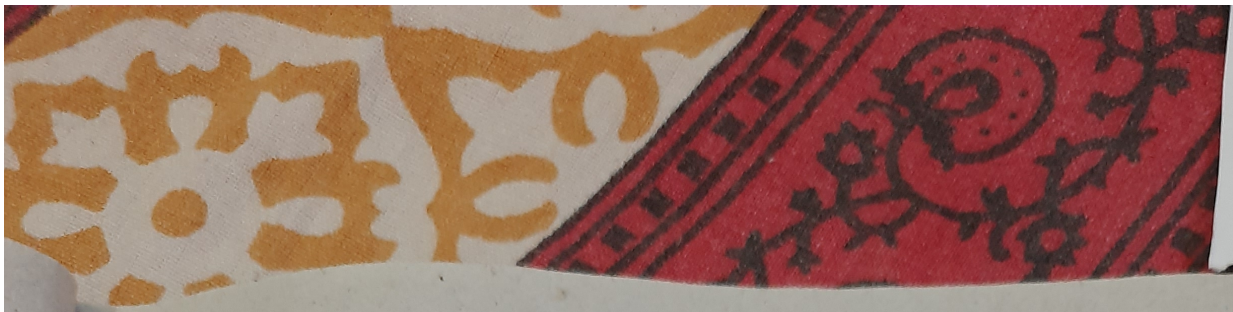

• ब्रह्मचर्य जीवन में व्रतों का पालन
• इसके के तहत विद्यार्थियों का मुख्य देखा था पड़ता है,
• ब्राह्मण वर्गों से गृहस्थ जीवन के प्रवेश
• इस आश्रम के जिम्मेदारियों को सम्भालने के लिए उन्हें तैयार किया जाता था,

IV • शिक्षा चरित्र का निर्माण
• ज्ञान से अखिल चरित्र का निर्माण हो

V हिन्दु शिक्षा शास्त्रियों पर यह आरोप लगाया जाता है, कि

VI फिर भारतीय शिक्षण पद्धति एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है,
• वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन:-
जैसे- न्याय शास्त्र, दर्शन विधि, साहित्य आदि का अध्ययन करते थे
• व्यक्तित्व का विकास वैदिक शिक्षण पद्धति है मूल का
• अर्थवेद वेद - योद्धा, शासक, - विशिष्ट शिक्षा मिलती
• उन्नयन संस्कार -
• व्यक्ति का समाज के प्रति कर्तव्य है,
• कि एक आदर्श सामाजिक प्राणी एवं धार्मिक नागरिक बनाना ही हिन्दु शिक्षा पद्धति का उद्देश्य था,

~~धार्मिक ... ... वैदिक ...~~